90)

सं स्रो.बि./एफ.डी./264-85/47414.--च्ंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. उचा रेक्टी फायर कारपोरेजन (ई) लिं०, 12/1, संयुरा रोड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री धीर सिंह तथा उसके अवन्यकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानलें में कोई श्रीचोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिगंय हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रविनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रविस्चना सं: 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए श्रविस्चना सं: 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त श्रविस्चना की घारा 7 के श्रदीन गठित श्रम न्यायालय, फरीजाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निविष्ट करने हैं जो कि उक्त प्रवन्तकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

व्याश्री धीर सिंह की सेवायों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. ग्रोविव/एफव्डीव/202-85/47420.—चूकि हरियाणा के राज्यपान की राय है कि मैं. सिन्धु इलैक्ट्रीकल इंन्जिनियरिंग, प्लाट नंव 174/24, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री राजबीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रव, ग्रीबोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई ग्रावितयों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्राधिसूचना मं 5413-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्राविसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्राधिसूचना की धारा 7 के श्राधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त तथा उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देशे हेतू निर्दिष्ट करते हैं को कि उक्त श्रवन्थकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुमंगत ग्रथवा संबंधित मामला है :--

क्या श्री राजबीर सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. श्री.वि./एफ. डी./199-85/47426.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० जी०जी० टैक्सटाईल (राजि०), के०के० मैन्यूफेनचरिंग, प्रा० लि०, 22-ए, एन.आई.टी., फरीदाबाद, के श्रीमिक श्री मोहर पाल चौधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीशोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद की न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

• इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ फड़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित गीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उवत श्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा संबंधित मामला है:— •

क्या श्री मोहर पाल चौधरी की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. भी. वि./एफ०डी०/200-85/47433.—चूंकि हरियाणा के राज्यवाल की राय है कि मैं. सर्व इण्डस्ट्रीज इन्जीनियरस एन्ड मैन्यूफैक्चरर्स, प्लाट नं० 52, सँकटर 24, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री ग्राईजक डैनियल तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौधोणिक विवाद है;

स्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब भौधोगिक विवाद अधिनियम्, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिस्चना सं. 5415-3-धम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साय पढ़ते हुये अधिस्चना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिस्चना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायालयं एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्संगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री आईजक डीनियल की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है?